अनुवाद प्रविधि और प्रक्रिया

ISBN No. : 937-93-5158-305-9

❖ अध्यक्ष ❖
डॉ. अशोक शिंदे

❖ सह संपादक ❖
डॉ. नूर मोहम्मद शेख

❖ संपादक ❖
डॉ. अमानुल्ला शेख

अनुक्रम

अ.न	शोध आलेख	पृष्ठक्र.
1.	भारतीय भाषाओं में अनुवाद : मुहावरे, लोकोक्तियों के संदर्भ में – डॉ. अमरजा रेखी	1
2.	हिंदी और भारतीय भाषाओं में अनुवाद की समस्या–डॉ. अरुणा हिरेमठ	5
3.	अनुवाद का स्वरुप और परिभाषा–डॉ. अशोक गायकवाड	9
4.	अनुवाद का स्वरुप एवं प्रक्रिया– डॉ. प्रविण तुपे	14
5.	अनुवाद प्रविधि और प्रक्रिया– प्रा. शरद कोलते	19
6.	अनुवाद स्वरुप एवं प्रक्रिया – प्रा. संजय महेर	22
7.	वर्तमान परिप्रेक्ष्य में अनुवाद का महत्व–डॉ. द्वारका गीते–मुंडे	25
8.	अनुवाद व्याहारिक प्रारुप–प्रा. गुलाबराव मंडलिक	30
9.	अनुवाद स्वरुप, समस्याएँ और उपाय –डॉ. शिवाजी सांगोळे	34
10.	साहित्यिक विधाओं में अनुवाद की समस्याएँ : काव्यानुवाद के संदर्भ में – प्रा.सोपान दहातोंडे	38
11.	अनुवाद–प्रकृति के आधारपर अनुवाद के प्रकार – प्रा. सूचिता गायकवाड	43
12.	सफल एवं श्रेष्ठ अनुवाद के तत्व एवं साधन– सविता मकासरे	51
13.	साहित्यिक विधाओं में अनुवाद की समस्याएँ– डॉ. कल्याण वाघ	55
14.	अनुवाद प्रक्रिया में सहायक साधनसामग्री का महत्व– प्रा. दत्तात्रय टिळेकर	64
15.	अनुवाद का स्वरुप एवं प्रक्रिया–प्रा. स्वाती बर्वे	68
16.	अनुवाद का स्वरुप एवं प्रक्रिया–प्रा. हनुमंत गायकवाड	72
17.	अनुवाद का स्वरुप एवं प्रक्रिया–प्रा. हिरा तुकाराम पोटकुले	75
18.	अनुवाद का व्यावहारिक पक्ष–डॉ. ओमप्रकाश झंवर	77
19.	साहित्यिक विधाओं में अनुवाद की समस्याएँ–जनार्दन वाघ	81

हिन्दी एवं भारतीय भाषाओं में अनुवाद की समस्या

लेखिका : डॉ.अरूणा हिरेमठ
मुख्यस्था, हिन्दी विभाग,
एल.वि.डि.महाविध्यालय,
रायचूर – 584101.
मो : 08123696727,
इ–मेल : drarunahiremath@gmail.com

हमारा देश भाषाओं की दृष्टि से एक संयुक्त परिवार है । संस्कृति, दर्शन, विरासत और इतिहास के वैभव हमारे लिए आम सम्पत्ति है। भाषायी अजनबीपन को अनुवाद के सहारे मिटा सके,तो हमारा अलगाव कम हो जायगा। कबीर, तुलसी–जैसे हिन्दी के वरिष्ठ कवि–मनीषियों के समान दूसरी भाषाओं में भी कवि–मनीषी हैं । कम्बन, तिरुवल्लुर, रंगनाथ, एषुत्तच्छन, पोतना, बसवेश्वर, अक्कमहादेवी–जैसे दक्षिण के कवि–मनीषी इसके उदाहरण हैं। अनुवाद के माध्यम से दक्षिण भारत के ये कवि–मनीषी अब उत्तर भारत के पाठकों के लिए आदरणीय साधक बन जाते हैं। ज्ञान–विस्तार होने पर सोच का दायरा भी विशाल बन जायगा । अनुवाद के जरिये नयी भावसम्पत्तियाँ मिलते रहने पर हम वैचारिक कूपमण्डूकता से बच सकेंगे ।

भारत कई दृष्टियों से विचित्रता का एक अजायबघर समझ जाता है । इस विचित्रता का एक द्योतक तत्त्व भाषा भी हैं । वहाँ अनेक भाषाएँ जन्मी–पनपी हैं। परन्तु भाषा की विविधता होने के बावजूद देश को तनिक भी सांस्कृतिक नुकसान नहीं हुआ। हर भाषा की अपनी गरिमा है। आज हमारे देश में नाना प्रकार की अवांछित प्रवृत्तियाँ सिर उठा रही हैं । खेद है कि कुछ लोग भाषा को भी अपने स्वार्थ के लिए एक बैसाखी बना रहे हैं ।

भारतीय भाषाओं के बीच अनुवाद के माध्यम से सद्भाव बढ़ाने की बात पर सारे लोग सहमत हैं। लेकिन अनुवाद की मुख्य कड़ी के रूप में हम एक भाषा को अपनायँगे, तो यह काम आसान हो जायगा । कुछ विद्वानों का मानना है कि बहुप्रचलित भाषा के होने के कारण अंग्रेजी को वह स्थान देना अधिक संगत होगा । कुछ विद्वान हिन्दी के पक्षधर हैं । याने हमें सेतु–भाषा या फिल्टर लैंग्वेज का चयन अवश्य करना है। पंजाबी कवयित्री अमृता प्रीतम की राय है 'मेरे ख्याल से हिन्दी हमारी संस्कृति और चिन्तन के नजदीक है । अंग्रेजी एक उन्नत जुबान होते हुए भी हमारी संस्कृति से दूर है । हमारे आदान–प्रदान की पहली कड़ी हिन्दी ही बन सकती है । तभी तो अनुवाद सुगम होगा । घरों, खेतों और गलियों मे प्रयुक्त भाषा का प्रयोग में आये । अगर आम लोगों की पहुँच के बाहर की भाषा का प्रयोग करते हैं, तो अनुवाद कोई नहीं चढ़ेगा ।

सटीक अनुवाद करने के लिए दूसरी भाषा का ज्ञान उसी प्रकार सहज और सटीक होना चाहिए, जैसे कि अपनी मातृभाषा का होता है । उदाहरण के लिए – जैसे हिन्दी में एक वाक्य है – अपकी क्या राय है ? तो तमिल में नींगळ एन्न योजनै सोल्लुगिरीरकळ ? मलयालम में निंगल एन्तु पस्युन्नु ? कन्नड में निन्ना सलहे एनु ? आदि । अनुवाद का जब इतना ज्ञान हो जाय, तब हम अनुवाद करने का प्रयास करें । हमारा अनुवाद करने का लक्ष्य अनुवाद में लेखक के मन्तव्य को पाठक तक सही – सही पहुँचाना होना चाहिए । अनुवाद के विषय को जनरुचि के हिसाब से चयन करना चाहिए । कभी–कभी अनुवाद करते समय अनुवादक अर्थ का अनर्थ कर बैठते हैं । अनुवाद में ऐसे निरर्थक शब्दों के प्रयोग से बचना चाहिए ।

अनुवाद की पहली समस्या यह है कि समतुल्य शब्दों को ढूँढ़ना । इसमें कभी – कभी अनुवादक असफल हो जाते है और सही रूप से लक्ष्यभाषा में सम्प्रेषण नहीं कर पाते । साहित्यिक अनुवाद में जोड़ना और तोड़ना सिद्धान्त ही लागू होता है । मतलब यह है कि मूल में अथवा स्रोत भाषा में कही हुई बात को लक्ष्यभाषा में लाते समय अनेक शब्दों को निकालना पड़ता है । इसे हम क्षतिपूरक सिद्धान्त कहते हैं। काव्यानुवाद भावात्मक होता है । यहाँ शब्द – प्रति शब्द अनुवाद करना सम्भव ही नहीं है ।

दूसरी समस्या है – संस्कृति का अनुवाद कर ही नहीं सकते । हर एक भाषा प्रदेश में संस्कार अलग – अलग होते हैं । इस संस्कृति तत्त्व को विस्तार से समझाकर अनुवाद कर सकते हैं । जैसे घूँघट की प्रथा , पायल निकालने की प्रथा, मुण्डन, कनछेदन आदि । एक प्रदेश में नासिका के वामभाग में नथ लगाते हैं, तो दूसरे प्रदेश में दाहिनी भाग में । उसी प्रकार रस्म–रिवाज, अन्धविश्वास की बातें भिन्न–भिन्न होती हैं। कहीं पर शुभ हैं, तो उसी को दूसरे प्रदेश में अशुभ मानते हैं ।

कोई भी भाषा हो, वह बहते नीर के समान है । उसके बहने में ही उसकी सार्थकता है । साहित्य की सभी विधाओं का सभी भाषाओं में अनुवाद ही भाषा का ग्राह्य रूप बना सकता है । किसी भी भाषा के प्रति अरुचि तब उत्पन्न होती है, जब पाठक को उसका ज्ञान न हो । यदि तमिल – साहित्य का अनुवाद हिन्दी में व अन्य भाषाओं में मिलेगा, तो स्वतः ही पाठकों की संख्या बढ़ेगी । सभी एक – द'सरे की संस्कृति के ऐतिहासिक धरोहर का ज्ञान प्राप्त कर सकेंगे । यहाँ प्रशन केवल हिन्दी भाषा के अनुवाद की नहीं है, अपितु अन्य भारतीय भाषाओं की भी है ।

भाषा के ज्ञान बिना किसी भी प्रदेश की संस्कृति को नहीं जान सकते। भाषा और संस्कृति एक ही सिक्के के दो पहलू हैं । उनसे ही साहित्य पुष्पित व पल्लवित होता है । भारत विभिन्न जाति, धर्म, भाषा व सम्प्रदायों का देश है । इसलिए यहाँ पर एकता की खण्डता का खतरा बना रहता है । जबकि राष्ट्रीय एकता के बिना कभी कोई भी राष्ट्र उन्नति नहीं कर सकता । इसलिए एकता होना अत्यावश्यक है । लेकिन जहाँ विभिन्न जातियाँ हों और उनकी भाषा भी अल्ग–अलग हो, तो उन्हें कैसे एकता के सूत्र में पिरोया जाय । इसलिए विद्वानों के मतानुसार–लोगों को एक साथ जोड़ रखने में भाषा ही सशक्त माध्यम है । भाषाओं में विभिन्नता होते हुए भी एक साथ जोड़कर रखा जा सकता है, वो माध्यम है ' भाषानुवाद ' । जब राष्ट्रीय समस्या या कोई राष्ट्रीय की बात हो, तो किसी राज्य की भाषा या बोली न बताकर राष्ट्रभाषा हिन्दी में ही अभिव्यक्त की जाती है ।

भारत को एकसूत्र में पिरोने का कार्य भाषानुवाद द्वारा ही किया जा सकता है । राष्ट्र की सामाजिक, ऐतिहासिक, भौगोलिक, शैक्षणिक, पौराणिक, वैदिक, आयुर्वेदिक सभी का विस्तार जो अलग – अलग भाषाओं में है, उन सभी का सभी भाषाओं में अनुवाद हो जाय, तो 'एक्य भावना ' होने में कोई सन्देह नहीं रह जायगा । आज विदेशी भाषाओं में अनुवाद की समस्या इतनी विकट नहीं है, जितनी भारतीय भाषाओं में है ।

आज हमें भारतीय भाषाओं के अनुवाद की समस्या का निराकरण करना है । समग्र भाषाओं के अनूदित होने से अनेक लाभ होंगे । अच्छा साहित्य सुलभ होगा । भाषायी दूरियों को मिटाने का सबसे सरलतम माध्यम है ' भाषानुवाद ' । हिन्दी भाषा में अन्य भाषाओं को साथ लेकर चलते हुए तथा उन्हें आत्मसात करने का विलक्षण गुण ही उसकी अपनी प्रगति का कारण है । भारत की सभी भाषाओं और बोलियों का सांस्कृतिक केन्द्र – विन्दु सदैव एक ही रहा है । भाषा की विविधता कभी एकता में बाधक नहीं रही । प्रत्येक भाषा व धर्म से सत्यं, शिवं, सुन्दरम की प्राप्ति हुई ।

अनुवाद को लक्ष्यभाषा की सामग्री को पढ़ते समय का पूरा ज्ञान होना चाहिए । नहीं तो अनुवाद में दोष आ जायगा । भारतीय संस्कृति के आदान – प्रदान को एक हद तक अनुवाद करना आसान रहेगा । लेकिन विदेशी भाषाओं में यह बहुत ही कठीन कार्य है; उदाहरण के लिए चाय पीने के लिए ' कुल्हड़ ' का प्रयोगा करते हैं । इस 'कुल्हड़' शब्द को मिट्ठी का पात्र कहने से सारगर्भित नहीं होगा । उसी प्रकार ' बहन ' शब्द के लिए दक्षिणी भाषाओं में भिन्न – भिन्न शब्द हैं । बड़ी बहन को ' अक्का ', छोटी बहन को ' तंगै ' कहते हैं । विदेशी भाषाओं में इस संस्कृति तत्त्व को विस्तार से समझाना चाहिए । अनुवाद में अलंकार, छन्द आदि का अनुवाद करना टेढ़ी खीर है, उसी प्रकार कहावत और मुहावरों का अनुवाद भी बहुत कठिन है ।

साहित्यिक अनुवाद के अलावा वैज्ञानिक विषयों पर अनुवाद करना पारिभाषिक शब्दों पर निर्भर है । अनुवादक को वैज्ञानिक तथ्यों पर विषय से जानकारी होनी चाहिए । अगर ऐसा नहीं हो, तो अनुवादक जगहँसाई का पात्र बन जायगा । इसमें मेरा एक सुझाव यह है कि वैज्ञानिक तथ्यों को खुले रूप में विस्तार से समझाकर फिर उसे समेटकर प्रस्तुत करें, तो वैज्ञानिक अनुवाद ठीक रहेगा ।

विधि का अनुवाद श्रमसाध्य नहीं है, पर कठिन अवश्य है । यहाँ शब्दानुवाद नहीं होना चाहिए, भाव को समझना चाहिए। उस भाव को समझाते समय शब्दों के गठन पर बहुत ध्यान देना चाहिए ।

हिन्दी के कई ग्रन्थों का अनुवाद तमिल में हुआ है । प्रेमचन्द की प्राय : सभी कृतियों का अनुवाद सभी भारतीय भाषाओं में हुआ है । प्रेमचन्द के उपन्यासों में 'निर्मला', 'सेवासदन', 'गबन', गोदान' इन चारों को तमिलभाषियों ने अधिक सराहा है । रा.वींळिनाथन और सरस्वती रामनाथन ने इनका अनुवाद किया है । 'गबन' का अनुवाद तमिल में 'चन्द्रहार' के नाम से 'कल्कि' नामक पत्रिका में धारावाहिक रूप से प्रकाशित हुआ था । इस अनुवाद में विळिनाथन ने तमिल संस्कृति के अनुरूप शब्दों का प्रयोग किया है । हिन्दी–रचनाओं में प्रसाद के कामायनी, आँसू आदि काव्यों आ भी अनुवाद सुन्दर ढ्ग से हुआ है ।

इसके अतिरिक्त हिन्दी से तमिल में डॉ.सुन्दरम ने 'अर्धनारीश्वर ', 'तुम्हारे लिए' आदि उपन्यासों का अनुवाद किया है । ' तुम्हारे लिए ' उपन्यास में वर्णित अल्मोड़ा के बर्फिले प्रदेश के परिवेश को तमिल में प्रस्तुत करते समय अनुवादक को बहुत नये शब्दों को गढ़ना पड़ा, क्योंकि वहाँ बरफ के लिए कई शब्द हैं । श्री शौरिराजन ने कई प्रसिद्ध लेखकों की रचनाओं को तमिल में अनुवाद किया है । बंगाली से त.ना.कुमारस्वामी ने की कहानियों का अनुवाद तमिल में प्रस्तुत कर बंग प्रदेश की संस्कृति को समझने में सहायता की है । उसी प्रकार मराठी उपन्यासकार खाण्डेकर की सभी रचनाओं का तमिल में अनुवाद हुआ है । तमिल में उर्दू, असमिया, मणिपुरी और पंजाबी कहानियों का अनुवाद भी तमिल लेखकों ने किया है । डॉ.मधु धवन ने पंजाबी कहानियों को तमिल में अनूदित करने में स्त्री लेखिकाओं को प्रोत्साहन दिया है ।

अनुवाद में वाक्य–रचना की भूमिका अधिक है। वह स्रोत भाषा से भिन्न होती है । अनुवादक को दोनों भाषाओं में समान अधिकार होना चाहिए । अनुवाद पुनर्सृजन है। वैज्ञानिक हो या साहित्यिक अनुवाद दोनों ऐसा होना कि मानों हम अनुवाद को नहीं पढ़ रहे हैं । इसप्रकार के अनुवाद में पुनरीक्षण का काम होना चाहिए। अनुवाद एक टीम वोर्क है। अनुवाद – कार्य अभ्यास से ही सफल होता है । वह शिल्प है। इस शिल्प की जो बखूबी जानकारी अधिक रखते हैं, वे ही सफल अनुवादक माने जायँगे ।

सफल अनुवाद की सबसे पहली और अनिवार्य शर्त यह है कि उसमें मूल पाठ यथार्थबोध कराने की, अर्थात उसका सही – सही अर्थ व्यक्त करने की क्षमता होनी चाहिए । यदि अनुवाद में अभिप्रेत अर्थ के विषय

में किसी प्रकार की भ्रान्ति, विचलन या सन्देह की सम्भावना रहती है, तो उसके अन्य सभी गुण निरर्थक हो जाते है ।

अनुवाद किसी भाषा, धर्म, वर्ग विशेष की अधिकृत वास्तु नहीं है । यह राष्ट्रीय कर्म है । उसी के रूप में स्वीकार किया जाना चाहिए । इसी कर्म से हम भारतेन्द्र हरिशचन्द्र की इन पंक्तियों को राष्ट्रीय जीवन का मूल मन्त्र बना सकते हैं ।

निष्कर्ष : अनुवाद की नयी पद्धति और तकनीक की आवश्यकता जितनी साहित्यिक अनुवादों के क्षेत्र में अनुभव की जा रही है, उतना ही प्रयोजनमूल तकनीकी अनुवाद के क्षेत्र में भी । साहित्यिक अनुवाद में सामाजिक – सांस्कृतिक सन्दर्भा, अभिव्यक्ति के स्तरों या शब्द शक्तियों एवं विकल्पों के वैभव के कारण अनुवाद की प्रकृति अलग हो जाती है । जवकी अकनीकी अनुवाद में अभिव्यक्त एकल संरचना, प्रामाणिक पारिभाषिक शब्दवाली और एकायामी वस्तुतत्त्व के कारण उनकी प्रकृति बदल जाती है । दोनों की समस्याएँ भी परस्पर भिन्न हैं । सारांशतः हम देखते हैं कि हिन्दी एवं भारतीय भाषाओं में अनुवाद की अनेकों समस्याएँ हैं, जिनका समाधान साहित्य – सेवियों के कर्मठ प्रयासों से दूर हो रहा है ।

संदर्भ :

1. हिन्दी भाषा तथा अनुवाद
2. अनुवाद चितंन
3. अनुवाद सिद्धन्त
4. अनुवाद विज्ञान – स्वरूप एवं व्याप्ति
5. सृजनात्मक साहित्य और अनुवाद

*****

ભારતીય

भाषा తెలుగు मराठी

বাঙালী

ਪੰਜਾਬੀ ਦੇ ગુજરાતી हिंदी English

संस्कृतम्

ಕನ್ನಡ ଓଡିଆ

उर्दू

தமிழ்

বাংলা শব্দ

Education Society's

Shri Dnyaneshwar Mahavidyalaya, Newasa

Tal- Newasa, Dist- Ahmednagar, Maharashtra (India), 414603